ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

समकालीन परिवार में महिलाओं की भूमिका

अशोक कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान

सारांश

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् देवगण ऐसे स्थान पर वास करते हैं जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है। सम्भवतः इसी भावना के तहत प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को विशेष स्थान प्राप्त था। उन्हें समान की दृष्टि से देखा जाता था। ई.पू. 3000 से ई.पू. 2000 के पूर्व आर्यन युग में महिलाएं समाज में अपना विशिष्ट स्थान रखती थी। परिवार किसी भी मानव समाज की आधारशिला होता है। इसकी महत्ता से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है। वैसे तो परिवार की अवधारणा और इसके महत्त्व को विश्व के सभी देशों और सभी संस्कृतियों में प्रमुखता दी गयी है। भूमण्डलीकरण और महानगरीय संस्कृति के इस दौर में संयुक्त परिवारों की अवधारणा दम तोड़ती जा रही है और उनका स्थान एकल परिवार लेते जा रहे हैं लेकिन इस परिवर्तन का एक सकारात्मक पक्ष भी है। कामकाजी महिलाओं की दिक्कतों को समझ कर परिवार की ओर से अब पूरा सहयोग दिया जाता है, उनकी घरेलू जिम्मेदारियों को बांटा जा रहा है। इस कारण महिलाओं की समाज में स्वतंत्रता, गतिशीलता को मान्यता मिल रही है और उन पर वे अनावश्यक सामाजिक बंधनों की पकड़ ढीली हो रही है। परिवार की आधुनिक प्रवृत्तियों में सबसे प्रमुख है, महिलाओं की शक्ति में वृद्धि। आधुनिक परिवार की महिलाएं घर की दहलीज लांघ कर बाहर निकलने लगी हैं। व्यवसाय, उद्योग और नौकरियों में वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, जिस कारण उनकी आर्थिक व सामाजिक हैसियत में सकारात्मक परिवर्तन आया है। महिलाओं में सामाजिक व राजनीतिक चेतना बढ़ी है। इसमें शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी काफी अधिक हो चुका है। इस प्रकार परिवार में पत्नी ने सेविका के स्थान पर सहयोगिनी और मित्र की स्थिति प्राप्त कर ली है।

मुख्य शब्द : महिला सशक्तीकरण, परिवार, समाज, आधुनिकता।

प्रस्तावना

वर्तमान भारतीय समाज में परिवार में महिलाओं की भूमिका का व्यापक महत्त्व है। नारी ब्रह्म विद्या है, श्रद्धा है, शक्ति है, पवित्रता है, कला है और वह सब कुछ है जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। प्राचीनकाल में नारी का कार्य क्षेत्र परिवार को सुदृढ़ बनाना, समाज को सुयोग्य एवं संस्कारवान सन्तति देना था। लेकिन आजकल नारी का कार्यक्षेत्र घर गृहस्थी के अलावा उसकी प्रतिभा उसकी चारदीवारी में कैद न रहकर जीवन के हर क्षेत्र में संसार के हर देश में, विश्व के हर कोने में उसकी प्रतिभा के चमत्कार हमें देखने को मिलते हैं। यही कारण है कि विश्व में सर्वाधिक प्रतिष्ठित नोबल पुरस्कार से अनेक महिलाएं अलंकृत हो चुकी हैं।

महिलाओं को घर के सभी कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। उन्हें खाना बनाने, सफाई करने, कपड़े धोने एवं बच्चों के लालन–पालन की भूमिका में ही व्यस्त रखा जाता है। नए उभरते हुए परिवार इसमें परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं। महिलाएं अब कुछ शक्ति प्राप्त कर रही हैं। इसके साथ सम्बद्ध तथ्य यह है कि बाल–विवाह का स्थान वयस्क विवाह ने ले लिया है और लड़कियों में शिक्षा का प्रसार भी तेजी से हो रहा है। विस्तृत होती अर्थव्यवस्था में महिलाएं भी अब कार्य कर रही है तथा जीवन स्तर को उठा रही है। ऐसे परिवारों में पुरुष स्त्रियों को समान व्यवहार देने लगे हैं। यद्यपि कामकाजी महिलाओं के परिवारों में यह सब चर्चा नहीं होती है। महिला क्योंकि परिवार में कोई आर्थिक योगदान नहीं देती है, अतः इन परिवारों में पुरुष उनसे अधिक सम्मान की अपेक्षा करते हैं। जब तक घर का कामकाज व बच्चों का लालन–पालन महिला का उत्तरदायित्व रहेगा, तब तक कोई भी परिवार व्यवस्था महिलाओं को पूर्ण बराबरी का दर्जा प्रदान नहीं करेगा।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र में अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य रखे हैं –

1. आधुनिक परिवार में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक कारकों में जागरूकता लाना।
2. आधुनिक परिवार में महिलाओं द्वारा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में लिए जाने वाले निर्णयों में महिलाओं की सहभागिता लाना।
3. आधुनिक परिवार में महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका पारस्परिक कुरीतियों एवं महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाना।
4. महिलाओं में सशक्तीकरण एवं जागरूकता लाना।
5. आधुनिक परिवार में महिलाओं की विभिन्न समस्याओं का आकलन करना।
6. आधुनिक समाज एवं परिवारों में महिलाओं के प्रति सम्मान में वृद्धि उत्पन्न करना।

साहित्यावलोकन

अधिकांश महिलाएं वर्तमान में अपने आत्मसम्मान और व्यक्तित्व के विकास को जीवन का लक्ष्य मानने लगी हैं। आज हिन्दू समाज के दो आधार स्तम्भ – सांस्कारिक विवाह और संयुक्त परिवार अब शिथिल पड़ रहे हैं। बहुत सी सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएं कामकाजी महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण पर लम्बे समय से कार्य कर रही हैं (ए.आर. देसाई, 1957)।

वर्तमान भारतीय समाज व्यवस्था पुरुष प्रधान है। इसमें कोई दो मत नहीं कि सभी धर्मों के पारिवारिक कायदों ने भी स्त्रियों के न्याय एवं समानता के अधिकार को नकार दिया है (दामिनी श्रीवास्तव)

अनीता मोदी (2011) के अनुसार महिला सशक्तीकरण विविध आयाम में महिलाओं से सम्बन्धित विविध पहलुओं यथा शिक्षा स्वास्थ्य, रोजगार व राजनीति आदि का तार्किक, सम्यक व विशद् विश्लेषण किया गया है।

डॉ. आलोक कुमार कश्यम ने अपनी पुस्तक "भारतीय समाज में नारी दशा एवं दिशा" में बताया कि वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं में विश्वव्यापी जागरूकता पैदा हुई है। हजारों लाखों महिलाएं औद्योगिक, शैक्षिक, प्रशासनिक और विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी करके आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो रही हैं। उनके पारिवारिक अधिकारों एवं चेतना के स्तर में वृद्धि हुई है।

अशोक नायक एवं हर्षित द्विवेदी ने 2013 में अपनी पुस्तक पंचायती राज में ग्रामीण नेतृत्व, महिलाएं एवं राजनीतिक सहभागिता में 73वें संविधान संशोधन अधिनियम में भारत में पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया।

आधुनिक परिवार में महिलाओं की भूमिका

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् देवगण ऐसे स्थान पर वास करते हैं जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है। सम्भवतः इसी भावना के तहत प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को विशेष स्थान प्राप्त था। उन्हें समान की दृष्टि से देखा जाता था। ई.पू. 3000 से ई.पू. 2000 के पूर्व आर्यन युग में महिलाएं समाज में अपना विशिष्ट स्थान रखती थीं। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में मामले में वैदिक युग को स्वर्ण काल की संज्ञा दी जाती है लेकिन इसके बाद के कालखण्ड में महिलाओं की सामाजिक व धार्मिक स्थिति में क्षरण आना शुरू हो गया है। परिवार किसी भी मानव समाज की आधारशिला होता है, इसकी महत्ता से कोई भी इनकार नहीं कर सकता। वैसे तो परिवार की अवधारणा और इसके महत्त्व को विश्व के सभी देशों और सभी संस्कृतियों में प्रमुखता दी गयी है लेकिन भारतीय परिवारों जैसे आदर्श परिवार और कहीं और देखने को नहीं मिलते हैं। भारतीय परिवार की रचना कर्त्तव्य प्रदान है। जिसमें सभी सदस्य सेवा–भाव से एक–दूसरे के साथ रहते हैं और परिवार के प्रति अपनी सामूहिक जिम्मेदारी महसूस करते हैं। आज भारतीय परिवार संक्रमण काल में हैं और परिवार के दौर से गुजर रहे हैं लेकिन फिर भी कर्त्तव्य और संयुक्तता की भावना को वे अपने में समेटे हुए हैं। परिवर्तन के इस युग में जब हर चीज बदल रही है तो भला परिवार इससे अछूते कैसे रह सकते हैं। परिवार नामक यह सामाजिक संस्था आज आधुनिक प्रवृत्तियों से कुप्रभावित हो रही है।

आधुनिक परिवार

भूमण्डलीकरण और महानगरीय संस्कृति के इस दौर में संयुक्त परिवारों की अवधारणा दम तोड़ती जा रही है और उनका स्थान एकल परिवार लेते जा रहे हैं। लेकिन इस परिवर्तन का एक सकारात्मक पक्ष भी है। कामकाजी महिलाओं की दिक्कतों को समझ कर परिवार की ओर से अब पूरा सहयोग दिया जाता है। उनकी घरेलू जिम्मेदारियों को बांटा जा रहा है। इस कारण महिलाओं की समाज में स्वतंत्रता, गतिशीलता को मान्यता मिल रही है और उन पर वे अनावश्यक सामाजिक बंधनों की पकड़ ढीली हो रही है। अभी तक ये बदलाव महानगरों और शहरों में ही अधिक तेजी से हो रहे हैं लेकिन गाँवों, कस्बों और निम्न वर्ग में भी बदलावा की बयार बहने लगी है। हालांकि उसकी गति अभी धीमी है। परिवार की आधुनिक प्रवृत्तियों में से प्रमुख है – महिलाओं की शक्ति में वृद्धि। आधुनिक परिवार की महिलाएं घर की दहलीज लांघ कर बाहर निकलने लगी हैं। व्यवसाय, उद्योग और नौकरियों में वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं जिसके कारण उनकी आर्थिक व सामाजिक हैसियत में सकारात्मक परिवर्तन आया है। महिलाओं में सामाजिक व राजनीतिक चेतना बढ़ी है। उनमें शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी काफी अधिक हो चुका है। इस प्रकार परिवार में पत्नी ने सेविका के स्थान पर सहयोगिनी और मित्र की स्थिति प्राप्त कर ली है।

समकालीन नारी की स्थिति

जिस प्रकार धुरी के कमजोर होने पर पहियों की गतिशीलता में कमी तथा धुरी न होने पर पहियों का कोई अस्तित्व नहीं है, ठीक उसी प्रकार नारी के कमजोर होने पर परिवार कमजोर तथा नारी के न रहने पर परिवार या समाज का कोई अस्तित्व नहीं है। परिवार संस्था संगठित होने के स्थान पर तार–तार हो जाता है और बिखर जाता है। नारी का परिवार के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान है, संवेदन सूत्र परिवार को आपस में जोड़े रहते हैं। नारी के

शिक्षित न होने या उसकी सही विकास न होने पर परिवार, समाज व देश की उपयोगिता के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि – "एक पुरुष के शिक्षित, सुसंस्कृत होने का अर्थ है अकेले उसी का उपयोगी बनना। परन्तु एक स्त्री यदि शिक्षित, समझदार और सुयोग्य हो तो समझना चाहिए कि पूरे परिवार के सुसंस्कृत बनने का सुदृढ़ आधार बन गया है।" यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि परिवार के सुख, शांति, सौम्यता, सुव्यवस्था और सुसंस्कारिता भरा वातावरण बनाए रखने की जिम्मेदारी नारी की है। इसके लिए आवश्यक है कि महिलाएं अपना स्वयं का व्यवहार भी उसी स्तर पर रखे, छोटों के प्रति दुलार, स्नेह बराबर वालों के प्रति प्रेमपूर्ण स्निग्ध व्यवहार तथा बड़ों के प्रति परिवार की भावनात्मक और विचारात्मक जिम्मेदारी बड़ी सरलता से पूर्ण कर सकती हैं। उनके इस दायित्व वहन से टूटती, बिखरती परिवार संस्था फिर से अपना खोया सौंदर्य पा सकती हैं। इस प्रकार परिवार की धुरी बनकर समाज के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

शिक्षा महिलाओं की स्थिति की बुनियादी का दूसरा पत्थर है जो सहभागिता से निकटता से जुड़ा है। उच्च शिक्षा से ही प्रतिष्ठामूलक पद मिल पाते हैं। शिक्षा बौद्धिक क्षमता बढ़ाती है जिससे महिलाओं को अपनी योग्यता और शक्ति का ज्ञान होता है। इससे आत्म–सम्मान बढ़ता है तथा अधिकार मांगने की योग्यता भी आती है। फलतः शिक्षित महिलाओं को परिवार तथा बाहर भी अधिक ध्यान दिया जाता है। शिक्षित महिलाएं पारिवारिक मामलों में निर्णय लेने में स्वतंत्र होती हैं। पुनः पितृ प्रधान परिवार में शिक्षित महिलाएं दबाव को झेलने में अधिक समर्थ होती हैं। वैवाहिक निर्णयों में भी उनकी भूमिका होती है। अधिक स्वायत्तता के साथ ही शिक्षित महिलाओं का भौतिक साधनों पर नियंत्रण अधिक हो जाता है। दूसरे, शिक्षा से घर के बाहर रोजगार के दरवाजे खुल जाते हैं जिससे महिलाएं आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होती हैं। फलतः पुरुषों के साथ समान व्यवहार कर पाती हैं। शिक्षा से अपने पति और बच्चों पर अधिक ध्यान दे पाती हैं। शिक्षा से बाह्य जगत की सूचनाओं के स्रोत खुल जाते हैं जो दृष्टिकोण में परिवर्तन लाते हैं।

समाधान

भारतीय नारी के स्वरूप को बदलने के लिए निम्न उपाय कारगर हो सकते हैं –

1. प्रत्येक परिवार की यह जिम्मेदारी है कि वह बालिकाओं को समुचित शिक्षा, पोषण तथा अन्य गतिविधियों का ध्यान रखे।
2. प्रत्येक महिला को ऊपर उठकर सामने आना होगा जिससे वह अपना अधिकार खुद माँग सके।
3. महिला सामूहिक जन आंदोलन तथा दहेज विरोधी आंदोलन महिला संगठन बनाकर किए जाएं।
4. स्त्री स्वयं स्त्री की सहायिका बने और अन्य सामाजिक गतिविधियों में भाग लें।
5. समाज में उच्च पद प्राप्त करने हेतु महिलाएं स्वयं नव जागृति आंदोलन चलाए और समाज के प्रत्येक परिवार की स्थिति को समझे।
6. महिलाओं के विकास के लिए समुचित मशीनरी विकसित की जाए।
7. महिलाओं/बालिकाओं के साथ होने वाला हर प्रकार का भेदभाव समाप्त किया जाए।
8. बाल वेश्यावृत्ति रोकी जाए तथा बिचौलियों को कठोर दण्ड दिया जाए, जो ऐसा करने के लिए बालिकाओं को मजबूर कर देते हैं।
9. महिलाओं को उत्पादन स्रोतों, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सूचना एवं प्रौद्योगिकी में बराबरी का अधिकार दिए जाए।
10. महिलाओं की राजनीतिक निर्णय की प्रक्रिया में साझेदारी सुनिश्चित करने हेतु उचित कदम उठाए जाएं।
11. नारी स्वयं नारी का उत्थान करे जिससे महिलाओं में सामूहिक जागृति पैदा हो सके।
12. महिलाओं को स्वयं अपना चहुंमुखी विकास करने के लिए आगे आना होगा। चाहे क्षेत्र शिक्षा का हो या खेलकूद, चिकित्सा का।
13. नारी की अतिवादी मानसिकता दूर करने हेतु उसे सीमित जनसंख्या साक्षरता का महत्त्व आदि समझाए।
14. नारी को "सीमित परिवार सुख का आधार" तथा "दो ही बच्चे घर में अच्छे" आदि से अवगत कराएं।
15. महिलाओं में शिक्षा का स्तर सुदृढ़ कर दिया जाए ताकि वह आने वाली पीढ़ी को पढ़ा–लिखा सके।

निष्कर्ष

वर्तमान परिवारों में महिलाओं के शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण महिलाओं की पारिवारिक कार्य के साथ–साथ कामकाजी महिलाओं व उनके परिवार के सामाजिक व आर्थिक स्तर में परिवर्तन आया है। अभी भी भारतीय लोग विश्वास करते हैं कि माता–पिता के सहारे के लिए बेटे का होना जरूरी है। वर्तमान परिवारों में महिलाओं की शिक्षा के प्रचार–प्रसार से वह नौकरी करने लगी हैं जिससे घर के माहौल में बहुत परिवर्तन आया है। महिलाएं शिक्षित होंगी तो पूरे परिवार पर शिक्षा का प्रचार–प्रसार होगा। वर्तमान महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विश्व के सभी देशों में एवं सभी स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं जिसके परिणाम भी सकारात्मक आ रहे हैं और वर्तमान में विश्व में महिला साक्षरता का प्रतिशत दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। आधुनिक परिवार में संचार माध्यम के द्वारा महिलाओं की जीवनशैली में भी परिवर्तन आया है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार से महिलाओं की परिवार में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक निर्णयों में भूमिका प्रमुख हुई है। आधुनिक परिवारों में महिलाओं के काम–काज एवं आर्थिक स्तर में भी परिवर्तन आया है। महिलाओं की राजनीतिक क्षेत्र में सहभागिता हेतु 73वें संविधान संशोधन अधिनियम में पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया है।

"बेटियां अनमोल हैं" कार्यक्रम राजस्थान के सभी महाविद्यालयों में एक साथ 17 नवम्बर, 2017 को मनाया गया है। यह सरकार का सराहनीय कदम रहा। इस कार्यक्रम ने विश्व रिकॉर्ड बनाया है। इस प्रकार के कार्यक्रमों से शिक्षा एवं स्वास्थ्य आदि योजनाओं से महिलाओं का विकास सम्भव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *तुलसी पटेल : भारत में परिवार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
2. *आर.पी. तिवारी : भारतीय नारी – वर्तमान समस्याएँ और समाधान, ए.पी.एच., नई दिल्ली*
3. *प्रज्ञा शर्मा : भारतीय समाज में नारी, पोईंटर पब्लिशर्स, जयपुर, 2001*
4. *जे.सी. अग्रवाल : भारत में नारी शिक्षा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली*
5. *सुधारानी श्रीवास्तव, आशा : महिला शोषण और मानवाधिकार, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 200*
6. *राजस्थान पत्रिका*
7. *दैनिक भास्कर*
8. *कुरुक्षेत्र*